بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 05 जुलाई 2024 स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

बदरुल मोइद तथा दूमतुल जनदल नामक युद्धों के हालात एवं घटनाओं का बयान तथा विश्व में शांति स्थापना के लिए दुआ की तहरीक और मुसलमानों को अपन अस्तित्व की सुरक्षा के लिए संयुक्त होने का उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-05.07.24
محلہ احمدیہ قادیان۔پنجاب۔143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ
امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आज दो लड़ाईयों का वर्णन करूँगा। पहला युद्ध बदरुल मोइद नामक लड़ाई है जो 4 हिजरी में हुई। इस युद्ध को बदरुस्सानिया तथा बदरुस्सुग़रा भी कहा जाता है। आँहज़रत ﷺ शअबान के महीने 4 हिजरी में बदर नामक स्थान की ओर रवाना हुए। कुछ इतिहासकारों ने महीने के नाम में मतभेद किया है। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि 4 हिजरी में जब शव्वाल के महीने का अन्त आया तो आँहज़रत ﷺ डेढ़ हज़ार सहाबियों की सेना के साथ मदीने से बाहर निकले। इस युद्ध का कारण यह है कि अबू सुफ़यान बिन हरब जब ओहद की लड़ाई से वापस पलटा तो उसने कहा था कि अगले साल हमारी तथा तुम्हारी मुलाक़ात बदरुस्सुफ़रा नामक स्थान पर होगी,

हम वहाँ लड़ेंगे। आँहुज़ूर ﷺ ने हज़रत उमर ؓ को उसे जवाद देने का निर्देश दिया था कि कहो, इन्शाअल्लाह। एक रिवायत के अनुसार आप स. ने स्वयं उत्तर में इन्शाअल्लाह फ़रमाया था।

बदर मक्का तथा मदीना के बीच एक प्रसिद्ध कुआँ है जो मदीने के दक्षिण पश्चिम में एक सौ पचास किमी की दूरी पर स्थिति है। इस्लाम से पूर्व के ज़माने में इस स्थान पर ज़िलक़अदा महीने की पहली तिथि से आठ दिन तक एक बड़ा मेला लगा करता था। कहने को तो अबू सुफ़यान ने युद्ध का यह ऐलान कर दिया था किन्तु अब ज्यूँ ज्यूँ समय निकट आता जा रहा था, अबू सुफ़यान युद्ध से पीछे हट रहा था। परन्तु ज़ाहिर यह कर रहा था कि जैसे वह एक अति विशाल सेना के साथ मदीने पर चढ़ाई की तय्यारी कर रहा हो। इस उद्देश्य के लिए उसने नईम नामक एक व्यक्ति को बीस ऊँटों का लालच देकर मदीने भी भिजवाया। जिसने अबू सुफ़यान की युद्ध की तय्यारी के सम्बंध में मुसलमानों को अति बढ़ा चढ़ा कर कहानियाँ सुनाईं और युद्ध से बचे रहने का उपदेश दिया। परन्तु निष्ठावान मुसलमान उस व्यक्ति की बातों में न आए तथा रसूलुल्लाह ﷺ को युद्ध पर रवानगी के लिए अपनी निष्ठा का विश्वास दिलाया।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि बावजूद ओहद की विजय एवं इतनी महान सेना के साथ होने के अबू सुफ़यान बिन हरब का दिल भयभीत था तथा इस्लाम के विनाश की इच्छा होने के बावजूद वह चाहता था कि जब तक अत्यधिक सेना उसके साथ न हो जाए वह मुसलमानों के सामने न जाए।

हुज़ूर ﷺ को जब अबू सुफ़यान की सेना की सूचना मिली तो आप ﷺ ने अपने पीछे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ी. बिन अब्दुल्लाह बिन अबी सुलूल जो मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन अबी सुलूल के बेटे थे, किन्तु बड़े पक्के मुसलमान तथा आज्ञाकारी सहाबी थे, उन्हें मदीने का अमीर नियुक्त फ़रमाया। एक रिवायत के अनुसार आप ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा ؓको अमीर नियुक्त फ़रमाया था। आप स. ने अपना झंडा हज़रत अली ؓ को प्रदान किया। मुसलमान अपने व्यवसायिक माल के साथ बदर की ओर निकले। प्रत्यक्ष में तो मुसलमान अबू सुफ़यान से युद्ध करने के लिए निकले थे किन्तु मुसलमानों का कारोबारी सामान साथ रखना बताता है कि उन्हें ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से यह विश्वास था कि या तो अबू सुफ़यान इस युद्ध के लिए आएगा ही नहीं अथवा यदि आया भी तो ख़ुदा तआला मुसलमानों को विजय प्रदान करेगा तथा मुसलमान उन तिथियों में लगने वाले मेले में अपने व्यापारिक माल को बेच कर लाभ उठा सकेंगे तथा बाद के हालात बताते ह कि व्यवहारिक रूप में ऐसा ही हुआ।

मुसलमान तो अपने वादे के अनुसार युद्ध के मैदान में पहुंच चुके थे परन्तु दूसरी ओर अबू सुफ़यान ने क़ुरैश के सरदारों से कहा कि हमने नुईम को इस काम के लिए भेज दिया है, वह मुसलमानों को रवाना होने से पहले ही साहस तोड़ कर देगा, वह अत्यंत चेष्टा कर रहा है, परन्तु हम एक अथवा दो रातों के लिए निकलेंगे फिर हम वापस आ जाएँगे। यदि मुसलमान युद्ध के लिए न निकले तो हम कह देंगे कि मुसलमान युद्ध करने नहीं आए तथा इस प्रकार हम विजयी ठहरेंगे और यदि मुसलमान युद्ध के लिए

निकले तो भी हम वापस लौट आएँगे तथा कह देंगे कि यह वर्ष हमारे लिए सूखे का वर्ष है, युद्ध के लिए बहार का साल उचित होगा।

क़ुरैश ने अबू सुफ़यान के सुझाव को पसन्द किया तथा उसके नेतृत्व में दो हज़ार की सेना रवाना हो गई। मक्का से केवल बाईस किमी की दूरी पार करने के बाद अबू सुफ़यान तथा काफ़िरों की सेना की हिम्मत जवाब देने लगी तथा उन्हें मुसलमानों से लड़ाई करने का साहस न हुआ। अतएव अबू सुफ़यान ने सेना में वापसी की घोषणा कर दी तथा कहा कि तुम्हारे लिए बहार तथा समृद्धि का वर्ष युद्ध के लिए अधिक उचित रहेगा। इस समय सूखा पड़ रहा है अतः मैं वापस जा रहा हूँ, तुम भी वापस चलो। अबू सुफ़यान के इस निर्णय पर पूरी सेना वापस लौट गई तथा किसी ने भी इस फ़ैसले का विरोध नहीं किया जिससे पता चलता है कि काफ़िरों पर मुसलमानों से मुक़ाबले का कैसा भय छाया हुआ था।

आँहुज़ूर ﷺ आठ रातों के विश्राम के बाद वापस लौट आए और यूँ हुज़ूर ﷺ तथा इस्लामी सेना कुल सोलह रातें मदीने से बाहर व्यतीत करने के बाद वापस आ गए। शत्रु सामने आकर मुक़ाबला करने का साहस न कर सका। अतएव उसकी बड़ी निन्दा हुई तथा मुसलमानों के साहस बुलन्द हुए। उस क्षेत्र के कुछ स्थानीय काफ़िरों का झुकाव मक्का के क़ुरैश की ओर था। आँहज़रत ﷺ ने अत्यंत दलेरी के साथ उन पर अपना उद्देश्य स्पष्ट किया तो वे भी दुबक गए। बदर के कुछ व्यापारी वापसी पर जब मक्का गए तो उन्होंने अबू सुफ़यान को मुसलमानों की सुदृढ़ स्थिति एवं निश्चय से अवगत किया जिस पर अबू सुफ़यान तथा मक्का के क़ुरैश अपनी कायरता एवं वादा तोड़ने पर बड़े लज्जित हुए।

दूसरा युद्ध दूमतुल जनदल है। यह 25 रबीउल अव्वल, 5 हिजरी में हुआ। यह स्थान मदीने से 450 किमी. की दूरी पर है। पुराने समय में यह यात्रा पन्द्रह से सतरह दिनों में पूरी होती थी। उस स्थान पर एक बड़ी व्यापारिक मन्डी लगा करती थी। यह पहला अभियान था जो मदीने से दूर रोम के शासन शाम नामक प्रदेश की सीमाओं के निकट घटित होने वाला था। इसकी पृष्टभूमि यह है कि मुसलमानों से बार बार पराजित होने तथा मुसलमानों के बढ़ते हुए राब को अनुभव करते हुए दीन के दुश्मन किसी ऐसे अवसर की तलाश में थे कि मुसलमानों तथा इस्लाम को जड़ से ही नष्ट कर दिया जाए। इसके अनुरूप योजना बनाने के लिए मदीने से दक्षिण दिशा की सीमा के अन्त में दूमतुल जनदल के क़बीलों ने इस्लामी शासन को चुनौती देने के लिए एक बड़ी सेना तय्यार करना शुरु की।

ये लोग उपद्रव मचाते हुए व्यापारिक दलों को लूट लिया करते थे। जब हुज़ूर ﷺ को इन बातों की सूचना मिली तो फ़ैसला हुआ कि इससे पहले कि दूमतुल जनदल के क़बीले कोई बड़ी सेना तय्यार करके मदीने पर चढ़ाई कर दें, अच्छा यह होगा कि उनके क्षेत्र में पहुंच कर उन्हें इस प्रकार बिखेर दिया जाए कि वे मदीने पर चढ़ाई से बाज़ रहें तथा व्यापारिक दल शांति पूर्वक शाम देश को जा सकें। नबी अकरम ﷺ ने लोगों को निकलने का आदेश दिया तथा एक हज़ार की सेना लेकर रवाना हुए। आप ﷺ रात को यात्रा करते और दिन भर छिप कर रहते।

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि आप स. पन्द्रह या सोलह दिनों की लम्बी यात्रा तय करने के बाद दूमतुल जनदल पहुंचे तो वहाँ जाकर पता चला कि ये लोग मुसलमानों के आने की सूचना पाकर इधर उधर निकल गए थे। यद्यपि आँहुज़ूर ﷺ वहाँ कुछ दिन ठहरे और आप स. ने छोटे छोटे दल भी रवाना किए परन्तु वे लोग ऐसे लापता हुए कि उनका कोई निशान न मिला।

दूमतुल जनदल से वापसी के विषय में लिखा है कि आँहुज़ूर ﷺ वहाँ तीन दिन ठहरने के बाद पूरी सेना को साथ लेकर मदीने की ओर रवाना होकर 20 रबीउस्सानी को वापस मदीना तशरीफ़ ले आए। यह युद्ध अपने परिणाम एवं उद्देश्य की दृष्टि से बड़ा लाभकारी रहा। इस युद्ध के द्वारा मुसलमानों को इस पूरे क्षेत्र का ज्ञान हो गया तथा यह भी एक उद्देश्य था कि इस पूरे इलाक़े की जानकारी हो जाए।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि दुआ की ओर भी पुनः ध्यान दिलाना चाहता हूँ, दुआ करें कि अल्लाह तआला दुनिया में सामान्य रूप से शांति भी स्थापित फ़रमाए। वह अमन जिसके लिए आँहुज़ूर ﷺ ने अपने ज़माने में भी प्रयत्न किए तथा यही उददेश्य है आप स. के आने का, तथा यही उद्देश्य है इस्लाम की शिक्षा का। यह सब कुछ अल्लाह तआला की विशेष कृपा से ही हो सकता है तथा इसके लिए दुआओं की भी विशेष आवश्यकता है।

प्रत्यक्षतः लगता है कि दुनिया वाले अब अपने पाँव पर कुल्हाड़ा मारने पर तुले हुए हैं। ज़ाहिरी रूप में अमन की स्रत नज़र नहीं आ रही, दूसरे इन पश्चिमी देशों में अब मुसलमानों के विरुद्ध अभियान भी बड़ा तेज़ हो गया है तथा भविष्य में ऐसा लगता है कि और अधिक तेज़ी होगी। इसके लिए मुसलमानों को अपने अस्तित्व की सुरक्षा की योजना बनानी होगी, संयुक्त होकर एक इकाई बनना होगा, अपनी हालतों को बेहतर करना होगा।

अल्लाह तआला करे कि ये इसे समझने वाले हों। मुस्लिम देशों सूडान इत्यादि में मुसलमान मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं, उनके लिए भी दुआ करें। ये दीन के मूल उद्देश्य को भूल कर अपने भाईयों को मार रहे हैं, यही कारण है कि ग़ैर भी मुसलमानों पर अत्याचार कर रहे हैं। अल्लाह तआला उनको देश एवं क़ौम की सेवा करने वाला तथा अमन क़ायम करने वाला बनाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, क़ादियान, पंजाब-18001032131